(Tamil Nadu), Dr. Kanimozhi NVN Somu (Tamil Nadu) and Shrimati Mahua Maji (Jharkhand).

(MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair*.)

Demand for including incidents of fire during summer in the Himalayan states as natural disaster

श्री महेंद्र भट्ट (उत्तराखंड): महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान हिमालय राज्यों में 'आपदा मोचन निधि' के मानकों में अग्नि से घटने वाली घटनाओं को परिभाषित न करने से राहत सहायता अनुमन्य किए जाने में आ रही कठिनाइयों की ओर दिलाना चाहता हूँ।

महोदय, ग्रीष्म काल में हिमालयी राज्यों में वन अग्नि की घटनाएं बढ़ जाती हैं तथा अनेकों परिवार अग्नि की इन घटनाओं से प्रभावित हो जाते हैं। इन अग्नि की घटनाओं से जहां इनके पालतू पशुओं की मृत्यु हो जाती है, वहीं अनेकों फलदार वृक्ष भी नष्ट हो जाते हैं, परन्तु इन परिवारों को उचित मुआवजा नहीं मिल पाता है।

महोदय, अग्नि की घटनाओं को प्राकृतिक आपदा में सम्मिलित नहीं किया गया है। भारत सरकार द्वारा अग्नि को 'राज्य आपदा मोचन निधि' के मानकों में अनुसूचित किया है, किंतु मानकों में अग्नि से घटने वाली घटनाओं को परिभाषित नहीं किया गया है। जिससे राहत सहायता अनुमन्य किए जाने में कठिनाई आ रही है। अतः मैं हिमालय राज्यों के वन क्षेत्र से लगे गांवो में निवासरत लोगों की विषम भौगोलिक परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए तथा अग्नि से घटित घटनाओं को प्राकृतिक आपदा मानते हुए राहत सहायता अनुमन्य किए जाने हेतु मानक निर्धारित किए जाने की मांग करता हूँ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the Special Mention made by the hon. Member, Shri Mahendra Bhatt: Shrimati Mahua Maji (Jharkhand), Shri Naresh Bansal (Uttarakhand), Shrimati Sangeeta Yadav (Uttar Pradesh), Shrimati Darshana Singh (Uttar Pradesh), Shri Haris Beeran (Kerala), Shri M. Mohamed Abdulla (Tamil Nadu), Shri Subhash Barala (Haryana), Shri Mayankbhai Jaydevbhai Nayak (Gujarat) and Shri Samik Bhattacharya (West Bengal).

Demand to save Gathuvan, Maharaji and Laicha, the rice varieties from extinction

श्रीमती फूलो देवी नेतम (छत्तीसगढ़): महोदय, धान का कटोरा कहे जाने वाले छत्तीसगढ़ में चावल की ऐसी अनेक प्रजातियां हैं जो विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गई हैं। एक ओर सेंटेड चावल, जिनमें दुबराज, विष्णुभोग, बासमती, जवाफूल, जीराफूल, हल्दीफूल जैसी किस्मों की खेती घटने लगी है, तो दूसरी ओर औषधीय गुणों से भरपूर देसी किस्में, गठुवन, महाराजी और लायचा, जो गठियारोधी, कैंसररोधी, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले और त्वचा संबंधी रोगों के